श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

Answer-Sheet

अभ्यासक्रम क्रं. : ९

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर ______ १ शहर ______

विद्यार्थी का नाम ______

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	पाँच /अ आ उ ऋ ऌ
(२)	ज्ञापक विद्याव्यासंग
(३)	शांतिनाथ भगवान
(४)	विकलेंद्रिय
(५)	
(६)	कुलमद
(७)	शैलेशीकरण
(८)	बोहडी राऊत
(९)	मुक्तेसरगढ
(१०)	श्रमण संघ को
(११)	त्रिभागशून्य
(१२)	त्यागीयो
(१३)	पचाने की
(१४)	गति आगति
(१५)	कनिष्ठ
(१६)	लंकापति
(१७)	वाक्चातुर्य
(१८)	पाप का
(१९)	नपुंसकवेद
(२०)	सूक्ष्म काययोग

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	समुच्छिन्न क्रियानिवृत्ति
(२)	लाभ मद
(३)	खुदके शुद्ध आत्मद्रव्य
(४)	अंतराय कर्म
(५)	भव्य उपासको को
(६)	श्री जयसिंहसूरि
(७)	वेदनीय
(८)	तेउकाय और वायुकाय
(९)	दशार्णभद्र राजा
(१०)	अष्टांग योग
(११)	मध्यान्ह में
(१२)	ऐश्वर्य
(१३)	सूक्ष्म काययोग रूप
(१४)	हरिया शाह
(१५)	गर्व, अहंकार, अभिमान

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	विकलेंद्रिय
(२)	तेरह
(३)	लक्ष्मी
(४)	अनुरक्त

(५)	स्थिरता
(६)	क्षेम
(७)	निरुपद्रवी वातावरण
(८)	वेद
(९)	तुम जय पाओ
(१०)	एक
(११)	देनेवाली
(१२)	पशुओं
(१३)	इसलिए
(१४)	जाते
(१५)	प्रमुख
(१६)	स्त्री
(१७)	तुम जय पाओ
(१८)	देनेवाले
(१९)	एक
(२०)	पांच स्थावर

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	3	(६)	2
(२)	१०	(७)	६
(३)	८	(८)	५
(४)	७	(९)	४
(५)	९	(१०)	१

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	४
(२)	६
(३)	६२
(४)	२४
(५)	१००
(६)	१६,०००
(७)	८2
(८)	१3
(९)	८
(१०)	९

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	८
(२)	×	(२)	20
(३)	✓	(३)	2
(४)	×	(४)	१४
(५)	✓	(५)	[illegible]
(६)	✓	(६)	१[illegible]
(७)	×	(७)	७
(८)	×	(८)	१८
(९)	✓	(९)	१[illegible]
(१०)	✓	(१०)	3

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. मै उत्तम जाति का हूं ऐसा अभिमान रखना, गर्व करना, मद करना वो जाति मद कहलाता है। ऐसे प्रकार के जाति मद के कारण हरीकेशी मुनि चंडाल कुल मे जन्मे थे। आजकल हमारे जीवन में कितनी-कितनी खामीयाँ, कमतरता है। हमारे पूर्वजों की ओर देखे तो, हमारे जीवन की ओर नजर डाले तो हमारे जीवन में कुछ कमी है। कभी हमारे से दूसरे रुप में बढ जाते है, कभी हमे अपने बल में कमी नजर आती है, हम अशक्त है, दूसरे बलवान है ऐसा लगता है, बलप्राप्ती के लिए क्या नही करते? पढने में, शास्त्राभ्यास में बहुत मेहनत करने पर भी निष्फलता मिलती है। ऐसी बहुतसारी बाते व्यवहार में देखने, सुनने, अनुभव करने मिलते है। किसी भी प्रकार का अभिमान करने के पहेले सचमुच बहुत सोचना चाहिए।

२. शैलेशीकरण याने की सूक्ष्म कायायोग में रहकर पर्वत की तरह स्थिर रहना। केवली भगवंत जिनका आयुष्य सिर्फ पाँच ह्रस्वाक्षर के उच्चारण जितना ही है तथा पर्वत के समान जिनका शरीर निश्चिल है उन्हें शुक्लध्यान के चौथे ध्यान स्वरुप शैलेशीकरण होता है। इस शैलेशीकरण का प्रारंभ कर चौदहवे अयोगी गुणस्थान में जाने की जाने की तैयारी करते है। इस सयोगी गुणस्थान के अंतमे अंतिम समय में तीस प्रकृतियों का उदय में विच्छेद होता है। अंगोपांग के उदय के विच्छेद होने से जो अंत में अवगाहन थी उससे त्रिभागशून्य अवगाहन करता है। इस गुणस्थानक में केवल वेदनीय कर्म का बंध है। ४२ प्रकृतियोंका उदय और ८२ प्रकृतियोंकी सत्ता होती है।

३. तेऊकाय और वायुकाय का गमन पृथ्वीकाय आदि नवपद के बारेमें होता है। पृथ्वीकायादि दस स्थानक में से निकले हुऐ जीव विकलेन्द्रिय के तीन दंडक में और तीन विकलेन्द्रिय के जीव पृथ्वीकाय आदि दस पद में जाते है। तेउकाय और वायुकाय की गति पृथ्वीकायादि नौ पदो में होती है। पृथ्वीकायादि नव पदो में पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय एवम् तिर्यंच पंचेंद्रिय का समावेश होता है। पृथ्वीकाय आदि दस स्थानक के जीवों की गति विकलेन्द्रिय, याने की बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय के तीन दंडक में होती है। विकलेन्द्रिय तीन दंडक की गति पृथ्वीकायादि दस पदों में होती है।

४. हे देवी तुम जलभय में से, अग्निभय में से, विष में से, विषधर में से, दुष्ट ग्रहभय में से, राजभय में से, राक्षस के उपद्रव में से, शत्रु समूह के उपद्रव में से, मरकी के उपद्रव में से, चोर के उपद्रव में से, इति संज्ञक उपद्रव में से, शिकारी पशुओंके उपद्रव में से, और भूत, पिशाच तथा शाकिनीओ के उपद्रव में से रक्षण कर, रक्षण कर। उपद्रव रहित कर, उपद्रव रहित कर। शांति कर, शांति कर। तुष्टि कर, तुष्टि कर, पुष्टि कर, पुष्टि कर, क्षेम कर, क्षेम कर। हे देवी, हे भगवती, हे गुणवती, तुम यहाँ लोगों को निरुपद्रवता, शांति, तुष्टि, पुष्टि और क्षेम कर, क्षेम कर। तुम सब यहाँ के लोगों का रक्षण कर, रक्षण कर। ये भय, उपद्रव सदा के लिए समाप्त कर।

५. वि.सं १२६३ में प.पू. धर्मघोषसूरि ने प्राकृत में "शतपदी" नामक ग्रंथ की रचना की। यह ग्रंथ समाचारी विषयक बहुत गहन था। इसलिए उनके पट्टशिष्य प.पू. महेन्द्रसिंहसूरि ने उसकी संस्कृत में सरल आवृत्ति रची। इस ग्रंथ के आधार पर से उनके विशाल अध्ययन, मनन और चिंतन का ख्याल आ जाता है। ग्रंथ के अंतिम अध्याय में अचलगच्छ की समाचारी की अन्य गच्छो की समाचारी के साथ तुलना की गयी है। ऐसी तुलनात्मक बराबरी द्वारा तत्कालिन विचारधारा का परिमार्जित स्वरुप हमारी समक्ष खडा होता है। धर्मघोषसूरि का अभिगम कैसा रचनात्मक था उसकी झाँकी